दैनिक भास्कर

Date: 16.07.2019

अब तक 153 इनोवेशन कर चुके सीरियल इनोवेटर पद्मश्री उद्भव कुमार भराली ने वैष्णव विद्यापीठ में युवाओं को बताए इनोवेशन के सही मायने

6 माह में ऐसी मशीनें बनाऊंगा जो दिव्यांगों को कपड़े पहनने, खाने और पर्सनल हाइजीन रखने में मदद करेंगी : उद्भव कुमार

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

भराली ने स्टूडेंट्स को बताए इनोवेशन के सही मायने, कहा - इनोवेशन वही जो उन्हें बेहतर ज़िंदगी दे जो तकलीफ़ में है

क्या आप कल्पना कर सकते हैं पांच साल का एक बालक जिसके हाथ सिर्फ कोहनियों तक हैं और पैर हैं ही नहीं वो खाना कैसे खाता होगा? कपड़े कैसे पहनता होगा? शौच के बाद अपनी सफाई कैसे करता होगा? एक बुजुर्ग जो लकवाग्रस्त है, देखभाल के अभाव में वो बिस्तर पर पड़े रहने को मजबूर है। मेरे पास ऐसे कई लोगों की समस्या आती है जिनकी देखभाल करने वाला कोई नही है। इनकी जिंदगी एक बंद कमरे तक सिमटी है क्योंकि उनके शरीर से भयानक बदबू आती है। कोई उनके पास तक नहीं जाता। खाना भी दरवाजे के नीचे से सरका दिया जाता है। क्या ऐसी मशीनें नहीं बनाई जा सकती जो इनका जीवन आसान बना दे। मेरे लिए इनोवेशन वही है जो ऐसे लोगों की मदद कर सके। मैं इस पर काम भी कर रहा हूं। अगले छः महीने में लीवर तकनीक से ऐसी मशीन तैयार हो जाएगी जो इनके शरीर की सफाई करने में मदद करेगी। लकवा मरीजों के लिए भी एक सहुलियत भरा पलंग तैयार हो रहा है।

इनोवेशन की अलग ही परिभाषा बताने वाले ये शख्स हैं नॉर्थ लखीमपुर के पद्मश्री उद्भव कुमार भराली। वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षारंभ समारोह में वे बतौर मुख्य अतिथि मौजूद थे। कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी की कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी, कुलपति डॉ. उपिंदर धर सहित अन्य लोग मौजूद थे।

उद्भव कुमार भराली

वैष्णव विद्यापीठ में उद्भव कुमार को सुनते स्टूडेंट्स, पेरेंट्स और फैकल्टी।

मेरे लिए इनोवेशन शौक नहीं बल्कि मेरा पेशा है। 153 इनोवेशन कर चुका हूं और परसों तक मेरे पास 131 असाइनमेंट्स और रखे हुए हैं। देशभर के अलावा दुनिया के कई देशों से लोग मुझे अपनी समस्याएं बताते हैं और मैं उनका सस्ते से सस्ता समाधान खोजने की कोशिश करता हूं। युवाओं को इनोवेशन की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग भी देता हूं। नॉर्थ लखीमपुर में मेरे पास भारत के हर राज्य के साथ अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया सहित कई देशों के युवा आते हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली में इनोवेशन की बात जरूर होती है लेकिन उसके ट्रेनिंग नहीं दी जाती। किताबों के माध्यम से पढ़ाने वाला शिक्षक इनोवेशन की ट्रेनिंग नहीं दे सकता। हमारे इंजीनियरिंग के सिलेबस को भी बदलने की जरूरत है।

गांव में तो सब फालतू कहते थे मुझे, जब अमेरिका ने पहचाना तब इज्ज़त मिली

इंजीनियरिंग की पढ़ाई आखिरी सेमेस्टर में छोड़ने के बाद परिवार चलाने के लिए मैंने कबाड़ से इनोवेशन करने की ठानी। सबसे पहले चाय के बागानों में उपयोग के लिए पॉलिथीन स्लिप बनाई। सालों तक काम करता रहा लेकिन पहचान नहीं मिली। 2006 में अनार के दाने निकालने की मशीन को अमेरिका में सराहना मिली उसके बाद भार, खासतौर पर नॉर्थ लखीमपुर के लोग मुझे पूछने लगे। 24 इनोवेशन कर चुका था तब तक भी मुझे गांव में फालतू कहा जाता था। आज दुनियाभर के लोग मुझे काम बता रहे हैं लेकिन मेरी प्राथमिकता वही लोग होते हैं जो जरूरतमंद हैं। मैं कोई काम फ्री में नहीं करता। जो पैसे मिलते हैं सब यूकेबी ट्रस्ट में लगाता हूं जहां में दिव्यांगों के लिए मशीनें तैयार करता हूं।

पत्रिका

इंदौर, मंगलवार, 16.07.2019

ANCHOR

वैष्णव विद्यापीठ के इंडक्शन प्रोग्राम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए 131 इनोवेशन कर चुके पद्मश्री उद्धव भराली

30 साल तक लोगों ने मुझे फालतू कहा, इसके बाद मेरे इनोवेशन्स ने दुनिया को चौंकाया

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ मैं असम के लखीमपुर जिले का रहने वाला हूं लेकिन मेरी पहचान इंडियन इनोवेटर है। अब तक 131 इनोवेशन कर चुका हूं। साल 1981-86 के बीच मेरे जिले में जीरो इंडस्ट्री थी। मैं इनोवेशन के क्षेत्र में काम करना चाहता था लेकिन जानता था परिवार में कोई सपोर्ट नहीं करेगा। 1987 में बैंकरप्ट होने के कारण परिवार को घर खाली करने का नोटिस मिला। उसी दौरान उन्हें पता चला कि किसी कंपनी को पॉलीथिन मेकिंग मशीन की जरूरत है जिसकी कीमत 5 लाख रुपए है। उस वक्त सिर्फ 67 हजार रुपए में ये मशीन तैयार की और यहीं से आविष्कार की शुरुआत हुई। ये बात

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के इंडक्शन प्रोग्राम में मुख्य अतिथि पद्मश्री उद्धव भराली ने साझा की। उन्होंने कहा, मैं कई तरह के इनोवेशन कर रहा था लेकिन इस बारे में कोई चर्चा नहीं कर रहा था। लोग आपके अच्छे कामों की जगह आपकी कमियों पर अधिक ध्यान देते हैं। मैंने जीवन में कई तरह की ट्रेजेडी देखी और वहीं से मुझे इनोवेशन के लिए दिशा भी मिली। कई आर्थिक संकटों से गुजरना पड़ा। साल 2006 तक मेरे पास मोबाइल भी नहीं था।

पद्मश्री और प्रेसीडेंट अवार्ड मिलने के बाद जिले में मिली पहचान

वे बताते है कि मैं कई सालों से इनोवेशन को लेकर काम कर रहा था लेकिन मेरे जिले के लोग भी मुझे नहीं पहचानते थे। जब साल 2006 में नासा के क्रिएट द फ्यूचर डिजाइन प्रतियोगिता में अनार के बीज निकालने वाली मशीन तैयार कर दूसरा स्थान प्राप्त किया तो सारी दुनिया में उनकी चर्चा हुई। इसके बाद मुझे प्रेसीडेंट और पद्मश्री जैसे सम्मान मिले। इससे पहले मुझे मेरे जिले के लोग भी नहीं पहचानते थे। मैंने आम आदमी की समस्याओं पर आधारित कई सारे इनोवेशन किए।

डिफरेंटली एबल लोगों के लिए कर रहे काम

वे बताते है कि मेरे इनोवेशन से जो राशि मुझे प्राप्त होती है उसका प्रयोग में डिफरेंटली लोगों के इनोवेशन करने में लगाता हूं। इंडिया में लोग ग्लैमराजइ होने के लिए काम कर रहे हैं। कोई भी कॉमन लोगों की प्रॉब्लम के लिए काम नहीं कर रहा। अगर आप डिफरेंटली एबल लोगो के लिए काम कर रहे हैं तो आपको उनकी समस्या समझनी होगी। तमिलनाडू और असम के कई हिस्सों में 80 प्रतिशत लोग व्हीलचेयर और ट्रायसिकल का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। इस दिशा में काम करने की जरुरत है। हम सभी को इस तरह से सोचने की जरूरत है।

शिक्षा में शामिल हो प्रैक्टिकल नॉलेज

वे बताते हैं एक समय ऐसा था जब इंजीनियर्स को जॉब प्रोवाइडर माना जाता था और आज वे खुद बेरोजगार हैं। हमें एकेडमिक के क्षेत्र में इनोवेशन को शामिल करने की जरुरत है लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी ने छात्रों को नवीन शिक्षा सत्र प्रारंभ होने पर बधाई दी एवं उनसे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आव्हान का किया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उपेन्द्र धर ने विद्यार्थियों को जीवन में 9 सी के सिद्धांतों का पालन करने की सलाह दी।

श्री वैष्णव विद्यापीठ के इंडक्शन प्रोग्राम में पद्मश्री उद्धव भराली ने कहा

इनोवेशन वही जो तकलीफें दूर करे

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

जीवन जीना कितना संघर्षमय हो सकता है यह बात किसी डिफरेंटली एबल से पूछें, जिनके हाथ पैर नहीं, फिर भी वे जिंदगी खुलकर जीते हैं। यदि आप एक अच्छा इंजीनियर बनना चाहते हैं तो अपने इनोवेशन में कुछ ऐसा कीजिए जिससे समाज के आम लोगों व डिफरेंटली एबल को जीवन जीने में मदद मिल सके।

यह बात पद्मश्री उद्धव भराली ने कही। वे भारत के पहले ऐसे इनोवेटर हैं जिन्होंने समाज के बेसहारा लोगों के लिए इनोवेशन की। वे सोमवार को श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के इंडक्शन प्रोग्राम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उद्धव को 131 इनोवेशन करने के लिए इस वर्ष पद्मश्री अवॉर्ड से नवाजा गया है। उन्होंने बताया कि इनोवेशन के दौरान 30 साल तक लोग उन्हें फालतू समझते थे, लेकिन वे रुके नहीं। पद्मश्री और प्रेसीडेंट अवॉर्ड मिलने के बाद उन्हें जिले में पहचान मिली। उन्होंने कड़ा संघर्ष किया और अपने इनोवेशन से दुनिया को चौंका दिया।

भारत में हर इनोवेटर के लिए अच्छा स्कोप

उन्होंने अपनी यात्रा के शुरुआती दिनों के बारे में कहा कि मैं असम के लखीमपुर में पला-बड़ा हूं। शिक्षा के दौरान ही इनोवेशन करना चाहता था, लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए वे मदद नहीं कर पाए। वर्ष 1987 में मेरे परिवार को बैंकरप्ट के कारण घर खाली करने का आदेश मिला। उस वक्त एक कंपनी को पॉलिथिन मेकिंग मशीन की आवश्यकता थी, उस मशीन की कीमत पांच लाख रुपए थी। मैंने केवल 67 हजार रुपए में वो मशीन तैयार करके दी। उन्होंने कहा कि भारत में पहले इनोवेशन को महत्व नहीं दिया जाता था, इसलिए मुझे लंबा समय लगा, परंतु आज भारत में हर इनोवेटर के लिए अच्छा स्कोप है, यदि वो अपना काम सही जगह पर ले जाए तो ही सफलता मिलती है। इनोवेशन करते वक्त आप यह ध्यान रखें कि आपका काम किसी न किसी के जरूर काम आए, तभी आपका इनोवेशन सफल है।

अनार के बीज निकालने वाली मशीन से मिली पहचान

उन्होंने बताया कि भारत को अभी अच्छे इनोवेशन स्तर तक पहुंचने के लिए 30 साल लगेंगे, इसका बड़ा कारण एकेडमिक है, जहां प्रेक्टिकल कम होते हैं जिससे बच्चों को अपने आइडिया दिखाने का मौका नहीं मिल पाता। उन्होंने बताया कि वर्ष 2006 में नासा की 'क्रिएट द फ्यूचर डिजाइन' प्रतियोगिता में उन्हें अनार के बीज निकालने वाली मशीन तैयार करने पर दूसरा स्थान मिला, जिसके बाद वे मीडिया में छा गए। इसके बाद उन्होंने यूकेबी नाम से ट्रस्ट शुरू किया, जहां वे अपने कमर्शियल इनोवेशन से प्राप्त राशि का उपयोग डिफरेंटली एबल लोगों के लिए इनोवेशन करने में करते हैं। उन्होंने कहा कि हम इनोवेशन में केवल लाइफ स्टाइल पर काम कर रहे हैं, ऐसे में डिसएबल लोग क्या करें।

9 'सी' मंत्रा अपनाएं विद्यार्थी

वाइंस चांसलर डॉ. उपेंद्र धर ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को कॉलेज शिक्षा के दौरान सावधानियां बरतने को कहा और कहा कि अपने जीवन में 9 'सी' मंत्रा अपनाएं, जीवन जीना और हर मुश्किल से लड़ना आसान हो जाएगा। 9 'सी' कमिटमेंट, कॉन्फीडेंट, कम्युनिकेशन, क्रियोसिटी, क्लियरिटी, कनेक्ट, कन्सर्ट, कम्पीटर, कॅरियर जैसे शब्दों को अपने जीवन में अपनाने की बात कही। उन्होंने कहा खुद से कमिटमेंट करें कि आप शिक्षकों की बताई बातों का पालन करेंगे। कॉन्फीडेंट -खुद पर कभी भी विश्वास न खोएं। कम्युनिकेशन-सभी से खुलकर व सकारात्मक रूप से बात करें। समारोह में फ्रेशर्स को शिक्षा व संस्थान में गरिमा बनाए रखने की शपथ दिलाई गई। इस मौके पर अधिक अंक से उत्तीर्ण होने वाले आठ विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल दिए गए, इनमें प्रज्ञा भार्गव, पॉल जैन, वैशाली जैन, सलोनी शर्मा, विपिन तिवारी, मोहित शुक्ला, निकिता भुढाड़, शरद श्रीवास्तव शामिल थे।